Research Paper | IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 8 | AUGUST 2025

लघु उद्योगों में व्यवसाय और प्रबन्धन में महिलाओं की भूमिका: नागौर जिले के विशेष सन्दर्भ में

संतोष शर्मा [1] |डॉ. अशोक कुमार यादव [2]

[1] शोधार्थी, टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर.

[2] सहायक आचार्य वाणिज्य, टांटिया विश्वविद्यालय श्री गंगानगर.

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
24th August 2025	26th August 2025

परिचयात्मक शोध की भूमिका

भारत एक विकासशील देश है। यहां की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कृषि के पश्चात लघु उद्योग ही हैं, जिन पर अधिकांश जनसंख्या आश्रित है। प्राकृतिक संसाधनों के यहां प्रचुरता है, यदि उनका समुचित उपयोग किया जाए तो आर्थिक विकास में गति लाई जा सकती है। प्राकृतिक संसाधनों का आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान है। इनका समुचित दोहन देश को तीव्र गति से विकसित करने में मददगार साबित हो सकता है। लघु उद्योग देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लघु उद्योगों का स्थान प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण रहा है। यह कहा जाता था कि हमारे यहां के सिल्क व्यवसाय के कारीगर इतने कुशल होते थे कि 20 मीटर के एक थान एक छोटी सी अंगूठी से भी निकाला जा सकता था। इन उद्योगों में अधिकतर महिलाएं ही कार्यरत थीं। उद्यमियों के रूप में महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति के कारण देश में महत्वपूर्ण व्यावसायिक एवं आर्थिक विकास हुआ है। देश में रोजगार के अवसर पैदा करके जनसंख्या परिवर्तन लाकर और महिला संस्थापकों की अगली पीढ़ी को प्रेरित करके महिलाओं के स्वामित्व वाले व्यवसाय समाज में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं। संतुलित विकास के लिए महिला उद्यमियों के सतत विकास को बढ़ावा देने की दृष्टि से समाज व सरकार दोनों ही प्रयासरत है।

नागौर भारत के सबसे बड़े राज्य राजस्थान का एक केंद्र स्थित जिला है। नागौर में गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले जनसंख्या का प्रतिशत बहुत ऊंचा है। यह भारत की पिछड़े हुए क्षेत्रो में से एक है, फिर भी यहां प्राकृतिक संसाधनों की बहुलता है। लघु उद्योगों द्वारा उपयुक्त संसाधनों का बेहतर उपयोग कर जीविकोपार्जन किया जा सकता है, जिससे बेरोजगारी की समस्या को दूर कर गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाली जनसंख्या में कमी की जा सकती है। बेरोजगारी व अल्प बेरोजगारी सबसे घृणित रूप में इस क्षेत्र को तबाह किए हुए हैं। इसका बड़ा समाधान लघु उद्योगों का प्रसार करना है।

प्रस्तुत शोध पत्र नागौर जिले के लघु उद्योगों एवं उनमें कार्यरत महिलाओं से संबंधित है। इस शोध पत्र में उन महिलाओं की समक्ष आने वाली समस्याओं और उन्हें दूर करने के उपायों पर प्रकाश डाला गया है। उद्योगों के कुशल संचालन में जो आवश्यक गुण होने चाहिए उनका भी वर्णन किया गया है।

महिलाओं में प्रबंधन के कई कौशल होते हैं तथा प्रौद्योगिकी और शक्ति कौशल में भी माहिर होती हैं। वे हाइब्रिड दृष्टिकोण का इस्तेमाल करती हैं, जो जटिल परियोजनाओं का प्रबंध करने में मदद करता है। इस शोध-पत्र में नागौर जिले में लघु उद्योगों में महिलाओं की भूमिका पर बहुआयामी अध्ययन किया गया है। पूर्व के शोधों में ऐसा नहीं किया गया था। वर्तमान अध्ययन में लघु उद्योगों में महिलाओं की सही स्थिति का पता लगाने हेतु 400 महिलाओं पर विस्तृत अध्ययन किया गया है। उनसे प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से संपर्क कर उनकी भूमिका में समस्याओं का गहराई से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

परिचयात्मक शोध के सोपान

लघु उद्योग निर्यात क्षमता बढ़ाते हैं एवं विदेशी मुद्रा अर्जित करते हैं। भारत के हस्तशिल्प, आभूषण, कालीन, कपड़ा, खाद्य पदार्थ आदि की विदेशी बाजारों में अच्छी मांग है। छोटे उद्योगों द्वारा निर्मित ये वस्तुएँ मेड इन इंडिया की प्रतिष्ठा बनाते हैं, विश्व मंच पर पहचान दिलाते हैं और विदेशी मुद्रा भी भेजते हैं। उदहारणस्वरूप हल्दी, मसाले, हस्तशिल्प वस्तुएँ, हैंडवॉवन वस्त्र, बांस एवं बांस की वस्तुएँ, हैंडमेड गिफ्ट आइटम्स जो विदेशों में काफी लोकप्रिय हैं।

लघु उद्योग महिलाओं को सशक्त बनाते हैं। महिलाओं को घर बैठे भी मशीनरहित या साधारण मशीन से काम करने का अवसर मिलता है-जैसे सिलाई-कढ़ाई, हस्तशिल्प, डेयरी, पापड़, अचार, ब्यूटी सर्विसेज आदि। स्वयं सहायता समूह माध्यम से उन्हें प्रशिक्षण, लोन और मार्केटिंग सपोर्ट मिलता है। इससे महिलाओं की आय में वृद्धि होती है, आत्मसम्मान बढ़ता है, समाज में उनकी भागीदारी बढ़ती है और परिवार की समृद्धि भी होती है।

लघु उद्योग पूंजी केन्द्रित उद्योगों पर निर्भरता कम करते हैं। यदि किसी बड़े उद्योग को एक जगह बंद करना पड़ा, तो समूचा क्षेत्र प्रभावित हो सकता है। किंतु यदि लघु स्तर पर अनेक छोटे-छोटे उद्योग कार्यरत हों, तो किसी एक क्षेत्रीय इकाई के बंद होने से समग्र आर्थिक प्रभाव कम होता है। यह विविधता पैदा करता है एवं जोखिम प्रबंधन के दृष्टिकोण से भी लाभदायक होता है।

परिचयात्मक शोध का महत्व

भारत जैसे विकासशील एवं तेजी से बदलते अर्थव्यवस्था वाले देशों में लघु उद्योग (Micro Small and Medium Enterprises – MSME) का महत्व अत्यंत गहरा है। चाहे वह रोजगार सृजन हो, ग्रामीण विकास हो, निर्यात बढ़ाना हो, नवाचार व उद्यमिता को बढ़ावा

देना हो अथवा आत्मनिर्भरता हासिल करना द् सभी क्षेत्रों में लघु उद्योग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) मंत्रालय द्वारा परिभाषा दी जाती है, जिसमें सूक्ष्म, लघु और मध्यम श्रेणी को तय सीमा पूंजी एवं वार्षिक टर्नओवर के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई उद्योग मशीनरीदार है और उसकी पूंजी 25 लाख तक तथा वार्षिक टर्नओवर 5 करोड़ तक है, तो वह लघु उद्योग की श्रेणी में आता है। वैसे विविध स्वरूपों मेंकृकुटीर, हस्तशिल्प, हस्तकरघा, खाद्य प्रसंस्करण, कागज़-पत्र निर्माण, वस्त्र निर्माण, आईटी सर्विसेज, हस्तकलाएँ, डेयरी, ब्यूटी पार्लर, डीजिटल प्रिंटिंग, हस्तनिर्मित गुड़, अचार, पापड़ आदिकृबहुत सी गतिविधियाँ शामिल हैं।

लघु उद्योगों का सबसे ठोस योगदान रोजगार सृजन के क्षेत्र में होता है। चूंकि ये श्रम-प्रधान उद्योग होते हैं, अतः बड़ी संख्या में कामगारों को प्रशिक्षित कौशल में मामूली सुधार के साथ रोजगार दिया जा सकता है। विशेष रूप से ग्रामीण एवं अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आय स्रोतों की कमी रहती है, वहाँ लघु उद्योग बेरोजगारी को काफी हद तक कम कर देते हैं। ग्रामीण युवाओं और महिलाओं को स्थानीय स्तर पर ही रोजगार मिल जाता है, जिससे उन्हें अपने गाँव से शहर नहीं जाना पड़ता। इससे आंतरिक प्रवासन की समस्या को भी नियंत्रित करने में मदद मिलती है।

लघु उद्योग कम पूंजी में प्रारंभ किये जा सकते हैं। इनमें बड़ा निवेश आवश्यक नहीं होता। बहुत से उद्योग घर-बसाए, परिवार के सदस्यों के सहयोग से किसी छोटे पते, तहखाने या पर्टिकल घर से ही शुरू किये जा सकते हैं। जो लोग बड़ी पूंजी जुटाने में असमर्थ हैं, उनके लिए यह एक सशक्त अवसर है-जैसे सिलाई-कढ़ाई, ब्यूटी पार्लर, पेपर बैग प्रोडक्शन, दही-पापड़ बनाना, डिजिटल प्रिंटिंग आदि। इन उद्योगों में छोटे निवेश से शुरूआत होती है और धीरे-धीरे विस्तार कर सकने की भी लचक होती है। इसी कारण से आत्मनिर्भर बनने का अवसर मिलता है।

परिचयात्मक शोध के उद्देश्य

1. लघु उद्योगों में महिलाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
2. नागौर जिले के विभिन्न लघु व कुटीर उद्योगों की पहचान करना।
3. उद्योगों में कार्यरत महिलाओं की समस्याओं की पहचान करना।
4. इनकी समस्याओं को पहचान कर इन्हें दूर करने के प्रयास करना।
5. महिलाओं के समक्ष आने वाली चुनौतियों का पता लगाना।

परिचयात्मक शोध का निष्कर्ष

लघु उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था के लिए मेरुदंड के समान हैं। रोजगार निर्यात उत्पादन ग्रामीण विकास और सामाजिक समावेशन के क्षेत्र में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। सरकार की विभिन्न योजनाएँ जैसे मुद्रा योजना नकलंउ रजिस्ट्रेशन CTGMSE और Digital MSME स्कीम लघु उद्योगों को नई ऊर्जा प्रदान कर रही हैं। यदि इन उद्योगों को उचित वित्तीय सहायता, तकनीकी प्रशिक्षण, और बाज़ार तक पहुँच दी जाए, तो यह भारत को आत्मनिर्भर और समृद्ध राष्ट्र बनाने में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

REFERENCES

1. जैन वी.के. - भारत में आर्थिक नियोजन विकास आर्थिक उदारीकरण में लघु व कुटीर उद्योग के संदर्भ में, 2000
2. राजस्थान लघु उद्योग निगम लिमिटेड, जिला उद्योग केन्द्र।
3. Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)
4. कश्यप जगन्नाथ कुमार लेहा सिंह - लघु एवं कुटीर उद्योग में रोजगार का क्षेत्र
5. शर्मा, संगीता- उद्यमिता विकास
6. भारत में एम.एस.एम.ई. की समस्याएं, रिसर्च नोर्ट प्रकाशन